दैनिक नवज्योति
जोधपुर, शनिवार, 26 नवम्बर, 2011

www.dainiknavajyoti.com
दैनिक नवज्योति

चुनौतियां नैतिक मूल्य भावना से प्रेरित होनी चाहिए : आचार्य

जैसलमेर में संस्कृति एवं जनतंत्र विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी शुरु

• न्यूज सर्विस

जैसलमेर, 25 नवंबर। दलित संसाधन केन्द्र, गोविन्द वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान द्वारा जैसलमेर के होटल हेरीटेज में शुक्रवार को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी लोकधुनी शुरू हुई। इस अवसर पर संस्कृति और जनतंत्र विषय पर प्रख्यात साहित्यकार नन्द किशोर आचार्य ने कहा कि संस्कृति और लोकतंत्रा सांस्कृतिक विकास एवं मूल्य चेतना का राजनीतिक प्रतिफलन है और लोकतंत्र इस बात का अवसर प्रदान करती है ताकि हाशिए पर लाए गए लोग सत्ता और समाज में अपनी मजबूती दर्शा सकें। उन्होंने कहा कि दलितों, स्त्रियों और आदिवासी उभार से लगातार जो चुनौतियां मिल रही हैं, वह केवल राजनीतिक नहीं हैं। ये चुनौतियां नैतिक मूल्य भावना से प्रेरित होनी चाहिएं। इस नाते प्रतिरोध की संस्कृति भी सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया है। इस प्रतिरोध से प्राप्त राजनैतिक शक्ति में भी मूल्य समाहित हैं और शक्ति प्राप्त करना नैतिक प्रक्रिया का सफल है। इसलिए संस्कृति और लोकतंत्रा लगातार मानव साक्षित्व प्रक्रिया का हिस्सा हैं। संगोष्ठी में प्रो. प्रहलाद जोगदानन्द (मुम्बई) ने विरोध की संस्कृति दलितों के संदर्भ में विषय पर थीम पर कहा कि समाज की मुख्य धारा के लोगों ने दलितों को एक अन्य का दर्जा देकर सदैव बहिष्कृत कर रखा हुआ है। अपनी बात सिद्ध करने के लिए वे तरह-तरह के सवाल खड़े करते हैं, गौर से चिंतन किया जायें तो सवाल सिर्फ मुख्य धारा का विरोध ही दिखता है और कुछ नहीं। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार हेतु भारद्वाज (जयपुर) ने कहा कि संस्कृति चर्चा का विषय नहीं बल्कि जीने की एक कला है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र सही मायने में कहीं है तो संस्कृति में है, गांवों में ही। इससे पूर्व स्वागत सम्बोधन करते हुए जी.बी.पन्त संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप भार्गव ने कहा कि आधुनिक की दासता हमें सदा अपने धारा में ले जाती है, पर प्रश्न हैं कि ऐसी परिस्थिति में भी मॉर्डनाइज्ड सभ्यता कैसे समाहित हो रही है। आज के प्रतिरोध के विभिन्न प्रकार व विमर्श के स्वतंत्रा चिंतन व अनुभव युक्त नई व्याख्याओं की आवश्यकता है।

संगोष्ठी का संचालन करते हुए प्रो. बद्रीनारायण ने विषय वस्तु रखते हुए कहा कि लोकतंत्र कोई राजनीतिक व्यवस्था नहीं जीवन दृष्टि है। इस अर्थ में लोकतंत्र सांस्कृतिक प्रक्रिया प्राप्त करने का प्रतिफल है। संस्कृति सह आयामी तौर पर प्रतिरोध का एक हिस्सा बताया।

दुःख की बात है कि संस्कृति का विमर्श ऐसे हाथों में आ गया है कि लोक धारणा एवं प्रतीकों से उभरती संस्कृति अब महोत्सवों तक सीमित रह गई है। संगोष्ठी में भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व प्रशासनिक अधिकारी राजू शर्मा, अनिल मिश्रा (कमिश्नर इनकम टैक्स), रतन कुमार साम्भरिया, आईदानसिंह भाटी, सी.एस.डी.एस फेलो शैल मायाराम, कृष्ण कल्पित (दूरदर्शन, दिल्ली निदेशक), अखिलेख सम्पादक तदभव आदि ने सार्थक विचार प्रस्तुत किए।